# सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) ने अटारी, कोलकाता द्वारा आयोजित संगोष्ठी श्रृंखला का किया उद्घाटन

*20 सितंबर, 2023, कोलकाता*

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने आज कृषि विज्ञान केंद्र प्रणाली में उत्प्रेरित परिवर्तन लाने के लिए एक संगोष्ठी श्रृंखला हाइब्रिड मोड में शुरू की है।

डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) ने अपने उद्घाटन भाषण में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर काबू पाने और अनुसंधान परिणामों को नवाचारों में बदलने के लिए बहु-संस्थागत और बहु-एजेंसी के सहयोग से मानव संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया। उस दिशा में ने इस तरह के संगोष्ठी श्रृंखला के आयोजन के लिए अटारी, कोलकाता के प्रति गहरी संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने कहा कि हमें अनुसंधान और विस्तार सहयोग के लिए कार्यान्वयन योग्य योजना तैयार करने की आवश्यकता है जो किसानों के साथ सहयोग के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों को सशक्त बनाएगी।

इस श्रृंखला में पहला व्याख्यान प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रोफेसर अरुण कुमार धर, निदेशक, एक्वाकल्चर (जलीय कृषि) पैथोलॉजी प्रयोगशाला, एरिज़ोना विश्वविद्यालय, टक्सन, एरिज़ोना, अमेरिका द्वारा "जलीय पशु स्वास्थ्य में सुधार करके जलीय कृषि स्थिरता को बढ़ाना" विषय पर दिया गया। उन्होंने बताया कि ओडिशा, पश्चिम बंगाल और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में तटीय संसाधन टिकाऊ मछली पकड़ने की प्रथाओं और जलीय कृषि के लिए जबरदस्त अवसर प्रदान करते हैं। प्रोफेसर धर ने बताया कि निर्यातोन्मुख मत्स्य विकास के लिए उन्नत नस्ल चयन, बेहतर पोषण और जैव सुरक्षा महत्वपूर्ण है।

संस्थान के निदेशक तथा संगोष्ठी श्रृंखला के संयोजक डॉ. प्रदीप डे ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हमें आशा है कि इन कार्यक्रमों के आयोजन से कृषि-नवाचार में अंतर-पीढ़ीगत सहयोग और रचनात्मकता की शक्ति का विकास होगा। साथ ही यह एक टिकाऊ, लचीला, न्यायसंगत और पौष्टिक खाद्य प्रणाली प्राप्त करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने इस क्षेत्र में मत्स्य पालन की समस्याओं और संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला तथा अच्छी गुणवत्ता वाली मछली की उपलब्धता बढ़ाने और पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया।

संगोष्ठी में उपस्थित केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, कोलकाता के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ. तापस घोषाल, डॉ. सी. चट्टोपाध्याय, प्रभारी, केंद्रीय जूट एवं संबद्ध रेशे बीज अनुसंधान केंद्र, बुदबुद, डॉ. एस.के. मन्ना, प्रमुख, नदी और मुहाना मत्स्य प्रभाग, केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और डॉ. मीनल सामंता, प्रमुख, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन प्रभाग, केंद्रीय मीठाजल जिवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर ने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

तदुपरांत 'वन हेल्थ' और क्षेत्र में मत्स्य पालन की भविष्य की दिशा विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कुछ प्रगतिशील मछली किसान भी संगोष्ठी में शामिल हुए और प्रश्न-उत्तर सत्र के दौरान उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। बैठक में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और क्षेत्र के सभी कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुखों तथा मत्स्य वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डॉ. अभिजीत हालदार, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।